लक्ष्य IAS

Since 2015

Live/Online

IAS/PCS

प्रारंभिक, मुख्य परीक्षा एवं साक्षात्कार

हिन्दी / अंगरेजी
माध्यम

ऑफलाइन
ऑनलाइन

Admision Open

Call -8182093320

Lakshya IAS
Lakshya IAS

मिशन सचिवालय

Start-12 Feb 2024

ONLINE & OFFLINE

RO/ARO

MAINS SPECIAL & FOUNDATION कोर्स

- प्रतिदिन 03 घंटे क्लास
- PDF नोट्स
- टेस्ट सीरीज
- रिकार्डेड वीडियोज
- शनिवार डाउट सेशन

सफलता-100%

Call-9236575773

Lakshya IAS
Lakshya IAS

प्रथम संस्करण

"मेरी कलम से"

लक्ष्य IAS
युवाओं का सही मार्गदर्शन एकमात्र लक्ष्य
Way to success

सामान्य हिन्दी

RO/ARO

समीक्षा अधिकारी/सहायक समीक्षा अधिकारी
की परीक्षा हेतु समग्र अवलोकन

प्रारंभिक परीक्षा स्पेशल

लोक सेवा आयोग उत्तर प्रदेश परीक्षा विशेष।

R.P. Singh

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग

द्वारा आयोजित

Target **RO/ARO**

सामान्य हिन्दी

(प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण)

Lakshya IAS, Lucknow

मेरी कलम से

सादर नमस्कार,

सभी पाठको को हर्षपूर्वक सूचित करना है कि विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में सामान्य हिन्दी का महत्त्व लगातार बढ़ता जा रहा है। प्रतियोगी परीक्षार्थियों के मार्गदर्शन और ज्ञानवर्द्धन के लिए सामान्य हिन्दी की अनेक पुस्तकें बाजार में उपलब्ध हैं जिसमें सबका प्रस्तुतिकरण भिन्न-भिन्न है। बहुत सी पुस्तकों का अध्ययन के बाद ऐसा लगा की यदि सभी पुस्तकों के महत्त्वपूर्ण अंशों का संकलन एक पुस्तक में कर दिया जाये तो प्रतियोगी छात्रों को विभिन्न पुस्तकों को पढनें की आवश्यकता नहीं होगी और परीक्षाओं के बदलते पैटर्न और आए दिन पूछे जाने वाले नए-नए प्रश्नों का एक स्थान पर संकलन भी मिल जायेगा। इन्हीं विन्दुओं को ध्यान में रखते हुए इस पुस्तक को लिखने का विचार आया।

विगत 20 वर्षों से अध्ययन-अध्यापन में जुड़े होने के कारण प्रतियोगी छात्रों की भावनाओं, कठिनाइयों और समस्याओं से भली-भाँति अवगत हूँ। आरम्भ से ही मुझमें प्रतियोगी परीक्षार्थियों की सफलता की राह को सरल, सुगम और आसान बनाने की उत्कृष्ट भावना रही है। संघ लोक सेवा आयोग और राज्य लोक सेवा आयोग सहित विभिन्न राज्य की अन्य परीक्षाओं में सामान्य हिन्दी में बहुत समस्याएं देखने को मिलती हैं इन्ही सबके निवारण हेतु समीक्षा अधिकारी/सहायक समीक्षा अधिकारी परीक्षा को टारगेट करते हुए इस पुस्तक को लिखा गया है।

इस पुस्तक के लेखन में इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि प्रत्येक विषयवस्तु का प्रस्तुतीकरण शुद्ध, संक्षिप्त, और सारगर्भित हो जिससे यह पुस्तक यथासम्भव कम समय में और कम श्रम द्वारा श्रेष्ठ तैयारी में सहायक हो सके। उम्मीद है इस पुस्तक को पढनें के बाद उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित समीक्षा अधिकारी व सहायक समीक्षा अधिकारी परीक्षा में सभी प्रतियोगी छात्र अच्छा प्रदर्शन कर सकेंगे।

इस पुस्तक की रचना संघ लोक सेवा आयोग, राज्य लोक सेवा आयोग जैसे- उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, उत्तराखण्ड, बिहार, राजस्थान राज्य और उच्च न्यायालय में समीक्षा अधिकारी और सहा.समीक्षा अधिकारी के पदों पर होने वाली लिखित व वैकल्पित परीक्षा के लिए की गई है। परीक्षार्थियों की सुविधा के लिए विभिन्न अध्यायों के अंत में वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का भी समावेश किया गया है। विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में आए हुए प्रश्नों का भी यथास्थान उल्लेख किया गया है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक प्रतियोगी परीक्षार्थियों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगी। इसे और भी अधिक श्रेष्ठ एवं उपयोगी बनाने के लिए पाठकों से सुझाव सादर आमन्त्रित हैं, यह सुझाव हमारे ई.मेल- lakshyaacademy.lko@gmail.com पर भेज सकते है, प्राप्त सुझावों का अगले संस्करण में यथासम्भव सुधार किया जाएगा।

सादर ।

Mr. R.P. Singh
(Lakshya IAS)

निर्देश

प्रथम संस्करण – दिसंबर 2023

मूल्य – Rs. 199.00 (ई-बुक)

लेखक : आर.पी.सिंह

प्रकाशक : LAKSHYA IAS

Composer : LAKSHYA IAS

विधिक घोषणाएं,

इस पुस्तक में प्रकाशित तथ्य, सिद्धांत, ज्ञान और सूचनाएँ, पूरी तरह से सत्यापित है, फिर भी यदि कोई तथ्य, सिद्धांत व जानकारी मानवीय भूलवश या टंकण त्रुटिं के कारण गलत पाई जाती है और इससे किसी भी प्रकार की क्षति होती है, तो उसके लिए संस्थान (लक्ष्य IAS), प्रकाशक, संपादक या मुद्रक जिम्मेदार या उत्तरदायी नहीं होगा।

Copyright – Lakshya IAS & Lakshya GS Crcker - इस पुस्तक के समस्त भाग लक्ष्य IAS के कॉपीराइट हितों से आच्छादित है, अतः इस सामग्री का किसी प्रकार से पूर्णतया या अंशतः व्यवसायिक उपयोग या बिना संस्थान की लिखित अनुमति के फोटोकांपी, रिकार्डिंग या अन्य किसी भी माध्यम से आदान-प्रदान पूर्णत: प्रतिबंधित है तथा ऐसा होने पर लेखन, प्रकाशन, कॉपीराइट उल्लंघन की श्रेणी में आएगा तथा ऐसा करने वाला व्यक्ति / संस्था को कॉपीराइट उल्लंघन के अंतर्गत विधि द्वारा निर्धारित हर्जाने और दंड के लिए उत्तरदायी ठहराया जायेगा। एवं उसके विरुद्ध विधिक कार्यवाही की जा सकती है. किसी भी प्रकार के वाद-विवाद हेतु न्यायिक क्षेत्र लखनऊ के न्यायाधिकरण होगा।

विशेष नोट – इस पुस्तक में प्रकाशित कंटेंट में किसी प्रकार के अपडेट एवं त्रुटिसुधार की जानकारी के लिए संस्थान की वेबसाइट के लिंक **www.lakshyaiaslko.com** पर विजिट करें।

समीक्षा अधिकारी/सहायक समीक्षा अधिकारी परीक्षा

प्रारंभिक परीक्षा पाठ्यक्रम

(कुल प्रश्न और कुल योग – 200)

1. सामान्य अध्ययन (वस्तुनिष्ठ) समय : 2 घंटे प्रश्न : 140 / पूर्णांक : 140

1. भारत का इतिहास एवं भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन,
2. करेंट अफेयर्स (राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम),
3. विश्व भूगोल तथा भारत का भूगोल और प्राकृतिक संसाधन,
4. उत्तर प्रदेश की शिक्षा संस्कृति, कृषि, उद्योग व्यापार एवं रहन-सहन और सामाजिक प्रथाओं के सम्बन्ध में विशिष्ट जानकारी ।
5. सामान्य विज्ञान,
6. भारतीय राज्य तंत्र, अर्थव्यवस्था एवं संस्कृति,
7. भारतीय कृषि, वाणिज्य एवं व्यापार,
8. जनसंख्या, पर्यावरण और नगरीकरण (भारतीय परिप्रेक्ष्य में),
9. सामान्य बौद्धिक क्षमता

2. सामान्य हिन्दी (शब्द ज्ञान एवं व्याकरण) (वस्तुनिष्ठ) समय: 1 घंटे प्रश्न : 60 / पूर्णांकः 60

1. विलोम	10 शब्द	2. वाक्य एवं वर्तनी शुद्धि	10 शब्द
3. अनेक शब्दों के एक शब्द	10 शब्द	4. तत्सम एवं तद्भव शब्द	10 शब्द
5. विशेष्य और विशेषण	10 शब्द	6. पर्यायवाची शब्द	10 शब्द

मुख्य परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम

1. सामान्य अध्ययन (प्रारंभिक परीक्षा जैसा)

समय: दो घण्टे प्रश्न: 120 पूर्णांकः 120

2. सामान्य हिंदी एवं आलेखन

समय: ढाई घण्टे खण्ड-1 पूर्णांकः 100

1. दिये हुये गद्यांश का शीर्षक, एवं सारांश एवं तीन रेखांकित अंशो की व्याख्या (3+6+12) 21 अंक
2. किसी दिये हुये सरकारी पत्र का सारिणी रूप में सार लेखन 15 अंक
3. पत्राचार 24 अंक
   - (i) शासकीय / अर्धशासकीय पत्र
   - (ii) कार्यालय आदेश / ज्ञाप / परिपत्र
   - (iii) विज्ञप्ति/टिप्पणी एवं प्रतिवेदन/अनुस्मारक
4. पारिभाषिक शब्दावली (प्रशासनिक एवं वाणिज्यिक शब्दावली)
   - (i) अंग्रेजी से हिन्दी (पाँच शब्द) 10 अंक
   - (ii) हिन्दी से अंग्रेजी (पाँच शब्द) 10 अंक
   - (iii) मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ (केवल पाँच) 10 अंक
5. कम्प्यूटर ज्ञान 10 अंक

खण्ड-2

सामान्य शब्द-ज्ञान एवं व्याकरण (वस्तुनिष्ठ)

समय: आधा घण्टे **पूर्णांकः 60**

(i) विलोम (6 शब्द)	12 अंक	(ii) वाक्य एवं वर्तनी शुद्धि (6 शब्द)	12 अंक
(iii) अनेक शब्दों के एक शब्द (6 शब्द)	12 अंक	(iv) तत्सम एवं तद्भव शब्द (6 शब्द)	12 अंक
(v) विशेष्य और विशेषण (6 शब्द)	12 अंक		

3. हिन्दी निबंध

समयः तीन घण्टे **पूर्णांक : 120**

इस प्रश्न पत्र के अन्तर्गत तीन प्रश्न होगें। प्रत्येक प्रश्न के एक-एक शीर्षक (क/ख/ग) का चयन करते हुए (दी गई शब्द सीमा में) कुल तीन निबन्ध लिखने होगें।

1.	(क) साहित्य और संस्कृति	शब्द सीमा 600	40 अंक
	(ख) सामाजिक क्षेत्र		
	(ग) राजनीतिक क्षेत्र		
2.	(क) विज्ञान, पर्यावरण एवं प्रौद्योगिकी	शब्द सीमा 600	40 अंक
	(ख) आर्थिक क्षेत्र		
	(ग) कृषि एवं व्यापार		
3.	(क) राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम	शब्द सीमा 600	40 अंक
	(ख) प्राकृतिक आपदाएं, भूस्खलन, चक्रवात, भूकम्प, बाढ़, सूखा इत्यादि ।		
	(ग) राष्ट्रीय विकास योजनाएं		

विषय सूची

क्रम	अध्याय	पृष्ठ स०
1.	पर्यायवाची शब्द	A-1 से A-18
2.	विशेष्य-विशेषण	B-1 से B-13
3.	तत्सम एवं तद्भव	C-1 से C-13
4.	विलोम शब्द	D-1 से D-18
5.	अनेक शब्दों के लिए एक शब्द	E-1 से E-12
6.	वर्तनी एवं वाक्य अशुद्धियां	F-1 से F-12

शीघ्र प्रकाशित हो रहा है,

- हिन्दी एवं आलेखन **RO/ARO** मुख्य परीक्षा विशेष
- सामान्य हिन्दी **UPPCS** प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा विशेष

.....आगे पढ़ें .....

निवेदन – सभी प्रिय पाठकों से अनुरोध है की किताब अच्छी लगे तो अन्य लोगों को भी अवश्य बतायें.

यदि आप हमारे साथ **IAS, PCS, RO/ARO & Other Exam** की ऑनलाइन और ऑफलाइन तैयारी करना चाहते है तो एक अवसर हमें भी दें.

अध्याय-1

पर्यायवाची शब्द

परिभाषा - पर्यायवाची दो शब्दों से मिलकर बना है पर्याय + वाची, पर्याय का अर्थ है समान तथा वाची का अर्थ है, बोले जाने वाले, अर्थात जिन शब्दों का अर्थ एक जैसा होता है उन्हें पर्यायवाची शब्द या समानार्थी शब्द कहते हैं। किसी भी समृद्ध भाषा में पर्यायवाची शब्दों की अधिकता रहती है। जो भाषा जितनी ही सम्पत्र होगी उसमें पर्यायवाची शब्दों की संख्या उतनी ही अधिक होगी। संस्कृत में इनकी अधिकता है। हिन्दी के पर्यायवाची शब्द संस्कृत के तत्सम शब्द है जिन्हें हिन्दी भाषा ने ज्यों-का-त्यों ग्रहण कर लिया है।

इसे हम ऐसे भी कह सकते है- जिन शब्दों के अर्थ में समानता हो उन्हें पर्यायवाची शब्द कहते है।

दूसरे अर्थ में- समान अर्थ वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द या समानार्थक भी कहते है। **जैसे-** सूर्य, दिनकर, दिवाकर, रवि, भास्कर, भानु, दिनेश, इन सभी शब्दों का अर्थ है सूरज इस प्रकार ये सभी शब्द सूरज के पर्यायवाची शब्द कहलायेंगे। पर्यायवाची शब्द को प्रतिशब्द भी कहते है। अर्थ की दृष्टि से शब्दों के अनेक रूप है जैसे- पर्यायवाची शब्द, युग्म शब्द, एकार्थक शब्द, समोच्चरितप्राय शब्द इत्यादि।

पर्यायवाची के प्रकार-

1- पूर्ण पर्याय – वाक्य में यदि एक शब्द के स्थान पर दूसरा शब्द रखा जा सके और अर्थ में कोई अंतर न पड़े तो इसे पूर्ण पर्यायवाची कहते हैं. जैसे- जलज/वारिज, तकलीफ/कष्ट, ईश्वर/परमात्मा/परमेश्वर, जल/पानी।

2- पूर्णा पूर्ण पर्याय – जो एक वाक्य में तो पूर्ण हो परन्तु दूसरे वाक्य में अपूर्ण हो. जैसे- कपड़ा टांगना/कपड़े लटकाना कपड़े फाड़ना/पट फाड़ना मुँह लटकाना/मुँह टांगना ।

3- अपूर्ण पर्याय – कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनका प्रयोग उचित स्थान पर ही किया जाता है और इनका स्थान सदैव स्थिर रहता है. लेकिन उचित स्थान पर इनका प्रयोग न होने से अर्थ का अनर्थ हो जाता है. जैसे- गाभिन/गर्भिणी, किसी जानवर के लिए गाभिन शब्द का प्रयोग करना उचित होगा, लेकिन यह शब्द किसी स्त्री के लिए नहीं प्रयोग कर सकते, स्त्री के लिए उचित शब्द गर्भिणी होगा ।

विधि या कानूनी क्षेत्र में प्रत्येक शब्द की निजी अर्थ मजबूत होता रहता है नहीं तो वकील उलझते रहते हैं. यहाँ एक बात ध्यान रखने की यह है कि इन शब्दों में अर्थ की समानता होते हुए भी इनके प्रयोग एक तरह के नहीं हैं। ये शब्द अपने में इतने पूर्ण हैं कि एक ही शब्द का प्रयोग सभी स्थितियों में और सभी स्थलों पर अच्छा नहीं लगता- कहीं कोई शब्द ठीक बैठता है और कहीं कोई। प्रत्येक शब्द की महत्ता विषय और स्थान के अनुसार होती है।

यहाँ एक बात ध्यान रखने की यह है कि इन शब्दों में अर्थ की समानता होते हुए भी इनके प्रयोग एक तरह के नहीं हैं। ये शब्द अपने में इतने पूर्ण हैं कि एक ही शब्द का प्रयोग सभी स्थितियों में और सभी स्थलों पर अच्छा नहीं लगता-कहीं कोई शब्द ठीक बैठता है तो कहीं कोई। प्रत्येक शब्द की महत्ता, विषय और स्थान के अनुसार भिन्न-भिन्न होती है।

अति महत्वपूर्ण पर्यायवाची
लगातार विभिन्न परीक्षाओं में पूंछे जाने वाली

शब्द	पर्यायवाची
अग्नि-	वहि, अनल, वायुसखा, धूमकेतु, कृशानु, जतदेव, हुताशन, अनल
असुर-	दनुज, यातुधान, निशाचर, रजनीचर, दानव, दैत्य, सुरारि
अमृत-	पियूष, सुधा, अमिष, जीवनोदक
आंख-	अम्बक, विलोचन, अक्षि, चक्षु, दृग, लोचन, नयन, विलोचन, प्रेक्षण, दीदा
आकाश-	धौ, अभ्र, अनन्त, दिव, व्योम, शून्य, पुष्कर, गगन, नभ, अंबर
पृथ्वी-	इला, भूमि, उर्वी, धरित्री, वसुधा, वसुंधरा, अचला, अनंता, रसा, विश्वंभरा, स्थिरा, धरा, धरनी, ज्या, क्षिति, गोधरा, अवनी, मेदिनी, मही, विपुला, गह्वरी, धात्री, गो, कुम्भिनी, भूतधात्री, जगत्, जगती, अंबरा, क्षमा, कु, भू, क्षोणी, पुहिम, वसुमति, रत्नगर्भा, भूतल, भूमण्डल
आम-	आम्र, रसाल, सहकार, अविसौरभ, च्युत, अंब, पिकबंधु, फलश्रेष्ठ
आनन्द-	मोद, प्रमोद, आमोद, विनोद, आह्लाद्ल, हर्ष
इच्छा-	ईप्सा, अभिलाषा, स्पृहा, ईहा, वांछा
इंद्र-	शचीपति, सुरपति, मधवा, वासव, महेंद्र, देवराज, पुरंदर, अमरजीत, शक, कौशिक, वज्रधर, विडौजा, शक्र, देवेश, शतक्रतु, सुत्रामा, सुरेश, वृहत्रा, पर्वतारि, शतमन्यु।
कपड़ा-	पट, वसन, वसव, अम्बर, चीर, पढ़, दुकूल, परिधान
किरण-	मरीचि, मयूख, अंशु, कर, रश्मि, प्रभा, अर्चि, गो, दीधिति, वसु, ज्योति, दीप्ति।
कुबेर-	किन्नरेश, किन्नरराज, अलंकेश, यक्ष, यक्षराज, यक्षपति, यक्षनायक, धनपति, धनद, धनपाल, धनेश, धनेश्वर, धनाधिप, श्रीद, जनेश्वर, राजराज, अर्थपति, अलकाधिप, इंद्रनिधि, ईशसखा, एककुंडल, कोशनायक, निधिनाथ, नृवाहन, पुण्यजनेश्वर, भंडारी, रुद्रसखा, वित्तपति, वैश्रवण, श्रीकण्ठसखा, हथवाहन, हरसखा, देवकोषाध्यक्ष, वसुप्रद ।
गणेश-	विभराज, गणपति, गणाधिप, गणाधि, गणनायक, गजबदन, गजानन, गजवदन, हेरम्ब, एकदन्त, विनायक, लम्बोदर, लम्बतुण्ड, तुण्डि, विघ्नराज, विघ्नेश, विघ्नेश्वर, विघ्ननाशक, विघ्नविनाशक, द्वैमातुर, भवानीनन्दन,

मृत्यु- मरण, निधन, स्वर्गवास, देहावसान, देहान्त।

मार्ग- रास्ता, पंथ, पथ, बाट, राह, मग, डगर

मुनि- तापस, यति, संत, साधु, संन्यासी, वैरागी।

विभिन्न परीक्षाओं में लगातार पूंछे जाने वाले पर्यायवाची शब्द .

अक्षर- वर्ण, नाशरहित, सत्य, मोक्ष, आकाश, आत्मा, नित्य, सत्य, आकाश

अज- बकरा, मेष, राशि, शिव, दशरथ के पिता, ब्रह्मा, जिसका जन्म न हो (ईश्वर)

अहि- साँप, सूर्य, कष्ट, राहु, जल, पृथ्वी, एक वर्ण, वृत अच्युत- स्थिर, अविनाशी, विष्णु, कृष्ण

अतिथि- मेहमान, साधु यात्री, अपरिचित व्यक्ति, अग्नि, कुश का पुत्र

अंकुश- नियंत्रण, दबाव, हाथी को चलाने-रोकने का अंकुश (जो लोहे का बना होता है)

अंग- अंश, शाखा, शरीर, शरीर का कोई अवयव

अंक- चिह्न, अक्षर, निशान, भाग्य, धब्बा, गिनती की संख्या, परिच्छेद, नाटक का अध्याय, पत्रिका का नम्बर, गोद, शरीर, पाप, बार

अग्र- आगे, पहले, अगुवा, मुख्य, सिरा, श्रेष्ठ

अम्बर- वस्त्र, आकाश, कपास, एक इत्र, अभ्रक, एक नगर, मेघ

अर्क- सूर्य, मदार का पौधा, इन्द्र, स्फटिक, काढ़ा

अरुण- सूर्य, रक्तवर्ण, लाल, सिंदूर, कुमकुम, बाल सूर्य अर्थ- धन, अभिप्राय, इन्द्रिय-विषयक, मतलब, माने, निमित्त, लिए

अशोक- शोकरहित, अशोक-वृक्ष, अशोक, सम्राट् अक्ष- पहिया की धुरी, आँख, रथ, सूर्य, ज्ञान, मण्डल, आत्मा, चौसर का पासा

अपेक्षा- इच्छा, आशा, आवश्यकता, बनिस्बत, तुलना में

अंचल- साड़ी का पल्लू, प्रदेश, सिरा

अंत- सिरा, समाप्ति, मृत्यु, भेद/रहस्य

अनन्त- विष्णु, सर्पों का राजा (शेष नाग), ब्रम्हा, आकाश, अविनाशी, अन्तहीन, नित्य, बहुत अधिक

अन्तर- आकाश, मध्य, छिद्र, अवसर, अवधि, व्यवधान, भिन्नता, दूरी, फक्र, मध्यवर्ती समय अपवाद- कलंक, किसी नियम की छूट, दोष, खण्डन

अमृत- जल, पारा, दूध, अन्न, स्वर्ण, गिलोय, सुधा, मृत्यु रहित

अन्तरंग- गुप्त, घनिष्ठ, अन्दर का/भीतरी

अंधेरा- अंधकार, उदासी, प्रकाश के बिना

अकड़ना- कड़ा होना, घमंड करना, दुराग्रह करना

अकाल- दुर्भिक्ष, अभाव/कमी, असमय

अतिरिक्त- फालतू, अलावा, अलग/भिन्न

अधर- अंतरिक्ष, तुच्छ, होंठ, बिना आधार का, नीचे का अधिकार- स्वत्व, शक्ति, कब्जा, पूरी जानकारी

अध्यक्ष- सभापति, विभाग का मुखिया, प्रभारी

अनर्थ- विपत्ति, अनुचित अर्थ, अर्थ का अभाव, अशुभ घटना अनुरूप-मिलता-जुलता, सदृश, अनुकूल, उपयुक्त

अन्न- खाद्य पदार्थ, अनाज

अबोध- ना समझ, दुरूह, दुर्बोध, मूर्ख

अब्ज- कपूर, शंख, चन्द्रमा, कमल

अक्षत- बिना घाव, पूरा, समूचा, कच्चा चावल

अखंड- समूचा, निर्विघ्न, जिसका क्रम न टूटे, जिसका खंडन न हो सके

अलग- पृथक, भिन्न, अछूता, न लगा हुआ

अवरुद्ध- रुका हुआ, ढका हुआ, बंद, गुप्त

अवली- झुण्ड, श्रेणी, माला, पंक्ति

अवस्था- उम्र, दशा, स्थिति

अवैध- गैर कानूनी, नाजायज, जारज

अशुद्ध- अपवित्र, गलत, गंदा असली- मौलिक, वास्तविक, युद्ध

अंबुज- कमल, बेत, वज्र, ब्रह्मा, शंख

अयन- गति, आश्रम, स्थान, काल, समय, अंश, थन का वह ऊपरी भाग जिसमें दूध रहता है

अर्घ- जलदान, मूल्य, भेंट, घोड़ा, मधु, शहद

अध्याय - 2

विशेष्य और विशेषण

परिभाषा –

जो शब्द संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, और अव्यय की विशेषता (गुण, दोष, संख्या, रंग, आकार-प्रकार इत्यादि) बताते है उसे विशेषण कहते है, और जिस शब्द की विशेषता बताता है उसे विशेष्य कहते है, जैसे – 'गोरा आदमी' में गोरा विशेषण है और आदमी विशेष्य है. विशेषण एक ऐसा विकारी शब्द जो या तो विशेष्य के पहले या बाद में प्रयुक्त होता है.

विशेषण शब्द (संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, और अव्यय) जिस शब्द के साथ प्रयुक्त होता है, उस शब्द की महत्त्व, व्याप्ति या प्रसिद्धी को कम, मर्यादित या संकुचित कर देता है, अर्थात हम यह कह सकते है की विशेषण रहित संज्ञा से जितनी वस्तुओं का बोध होता है, विशेषण लगाने से वह कम हो जाता है – जैसे – घोड़ा मेरा है,- काला घोड़ा मेरा है, (विशेषण युक्त शब्द). - 'घोड़ा' व्यापक शब्द है, जबकि 'काला घोड़ा' मर्यादित शब्द है.

उदाहरण -

1. **एक किलो** चीनी लाओ। 2. **सफेद** गाय **कम** दूध देती है।
3. बच्चा **होशियार** है। 4. **कुछ** लोग सो रहे हैं।
5. मेरी कक्षा में **बीस** विद्यार्थी हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में **एक किलो, सफेद, कम, होशियार, कुछ, बीस क्रमशः चीनी, गाय, दूध, बच्चा, लोग** तथा **विद्यार्थी** की विशेषता बता रहे हैं। अतः ये सभी विशेषण हैं।

विशेष्य और विशेषण- जिस संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता प्रकट की जाती है, उसे 'विशेष्य' और जो विशेषता-सूचक शब्द होता है, उसे 'विशेषण' कहते हैं। विशेषण शब्द प्रायः विशेष्य से पहले आता है; जैसे-

- कुछ **मीठे व्यंजन** अच्छे लगते हैं।
- **काली बिल्ली** को देखो।
- **दो किलो** दूध लाओ।

उपर्युक्त वाक्यों में क्रमशः **'व्यंजन', 'बिल्ली'** और **'दूध'** विशेष्य तथा **'मीठे', 'काली'** और **'दो किलो'** शब्द विशेषण है। कभी-कभी विशेषण शब्द विशेष्य के बाद भी प्रयुक्त होते हैं; जैसे-

1. यह छात्र **बुद्धिमान** है। 2. ये फल बहुत **मीठे** हैं।
3. वह व्यक्ति **योग्य** है। 4. रमेश **ईमानदार** है।

प्रविशेषण - जो विशेषण शब्द विशेषणों की भी विशेषता बतलाते हैं, उन्हें 'प्रविशेषण' कहते हैं; जैसे-

- क्षत्रिय **बड़े** साहसी होते हैं। ('बड़े' प्रविशेषण)
- यह लड़का **बहुत** अच्छा है। ('बहुत' प्रविशेषण)
- आप **बड़े** भोले हैं। ('बड़े' प्रविशेषण)
- 'मैं' **पूर्ण** स्वस्थ हूँ। ('पूर्ण' प्रविशेषण)
- मोहिनी **अत्यन्त** सुन्दर है। ('अत्यन्त' प्रविशेषण)
- घर **बिल्कुल** सूनसान था। ('बिल्कुल' प्रविशेषण)
- आज **बहुत** सर्दी है। ('बहुत' प्रविशेषण)

क्रिया-विशेषणों की विशेषता बताने वाले विशेषणों को भी 'प्रविशेषण' कहा जाता है; **जैसे-**

- गरिमा **बहुत** धीरे चलती है। ('बहुत' क्रिया-प्रविशेषण)
- गावस्कर **बिल्कुल** धीरे खेलता था। ('बिल्कुल' क्रिया-प्रविशेषण)
- मैं **ठीक** सात बजे आऊँगा। ('ठीक- क्रिया-प्रविशेषण)
- मैं **अधिक** तेज नहीं चल सकता। ('अधिक' क्रिया-प्रविशेषण)

❖ विशेषण के प्रकार

विशेषण के चार भेद होते हैं-

1. गुणवाचक विशेषण
2. परिमाणवाचक विशेषण
3. संख्यावाचक विशेषण
4. सार्वनामिक विशेषण या संकेतवाचक या निर्देशवाचक विशेषण

1. गुणवाचक विशेषण - संज्ञा अथवा सर्वनाम के किसी भी प्रकार के गुण से सम्बन्धित् विशेषता का बोध कराने वाले शब्दों को 'गुणवाचक विशेषण' कहते हैं; जैसे-

- वह **मोटा** आदमी है।
- उसके कोट का रंग **नीला** है।
- वह **गोरी** लड़की है।

इन वाक्यों में 'मोटा', 'नीला', 'गोरी', शब्द गुणवाचक विशेषण हैं। यहाँ 'गुण' का अर्थ केवल अच्छी विशेषताओं से नहीं है जबकि 'गुण' का तात्पर्य है- किसी भी वस्तु या व्यक्ति की विशेष स्थिति, विशेष दशा, रंग, गंध, काल, स्थान, आकार, रूप, स्वाद, बुराई, अच्छाई इत्यादि से है। अतः जो विशेषण किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषताओं का बोध कराए, उसे **गुणवाचक विशेषण** कहते हैं। कुछ प्रचलित प्रमुख गुणवाचक विशेषण इस प्रकार हैं-

- **कालबोधक-** आधुनिक, प्राचीन, ताजा, बासी, प्रागैतिहासिक, नवीन, नूतन, नया, क्षणिक, दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, वार्षिक, प्रतिदिन, निरन्तर, आज, लगातार, पहले, अभी, तभी, कल, अगला, पिछला इत्यादि।
- **स्थानबोधक-** ग्रामीण, शहरी, भारतीय, देशी, विदेशी, बनारसी, पर्वतीय, रूसी, जापानी, चीनी, नेपाली, बाहरी, अमरोही, लुधियानवी, जयपुरी, लाहौरी, जालंधरी, इलाहाबादी, आस-पास, ऊपर-नीचे, बाहर- भीतर, इधर-उधर, मैदानी इत्यादि ।
- **गन्धबोधक-** खुशबूदार, सुगन्धित, मधुगन्धी, सौंधी, महक, बदबूदार, दुर्गन्धित, गंधहीन इत्यादि ।
- **दिशाबोधक-** उत्तरी, दक्षिणी, पूर्वी, पश्चिमी, पश्चिमोत्तरी, पाश्चात्य, पौर्वात्य, ईशानकोणीय, ऊपरी, भीतरी, बाहरी इत्यादि।

- **गुणबोधक-** अच्छा, भला, शिष्ट, नम्र, सुशील, विनीत, दानी, ईमानदार, परिश्रमी, दयालु, सच्चा, सरल, निडर, विद्वान, सरीखा, धुँधला, सुन्दर, स्वस्थ इत्यादि।
- **दोषबोधक-** बुरा, खराब, झूठा, अशिष्ट, उद्धत, ढीठ, दुश्चरित्र, कंजूस, कामचोर, पापी, दुरात्मा, निर्दयी, निकृष्ट, धृष्ट, दुर्जन, कुटिल, कुरूप शूरवीर, कायर, बलवान, इत्यादि।
- **रंगबोधक-** काला, पीला, नीला, हरा, लाल, गुलाबी, सुनहरा, चमकीला, हरित, रक्त, जामुनी, बैंगनी, खाकी, बहुरंगी, सतरंगी, नवरंग इत्यादि।
- **अवस्थाबोधक-** नम, शुष्क, आर्द्र, नमीदार, पनीला, भुना हुआ, तला हुआ, जला हुआ, पका हुआ इत्यादि।
- **आयुबोधक-** युवा, वृद्ध, बाल, किशोर, अधेड़, प्रौढ़, तरुण इत्यादि।
- **आकारबोधक-** पर्वतीय, छोटा, बड़ा, मोटा, लम्बा, ठिगना, बौना, गोल, ऊँचा, चौड़ा, तिकोना, चौकोर, षट्कोण, अण्डाकार, त्रिभुज, सर्पाकार, गोलाकार, वृत्ताकार, टेढ़ा-मेढ़ा, सुन्दर, भद्दा इत्यादि।
- **दशाबोधक-** मोटा, पतला, युवा, वृद्ध, गीला, सूखा, स्वस्थ, अस्वस्थ, रोगी, निरोग, बलिष्ठ इत्यादि।
- **स्पर्शबोधक-** कठोर, कोमल, मुलायम, खुरदरा, मखमली, नर्म, चिकना, स्निग्ध इत्यादि।
- **स्वादबोधक-** खट्टा, मीठा, मधुर, कड़वा, नमकीन, कसैला इत्यादि।

2. परिमाणवाचक विशेषण -

जिस विशेषण शब्द से संज्ञा अथवा सर्वनाम की **माप, तोल या मात्रा** संबंधी विशेषता का ज्ञान हो, उसे **'परिमाणवाचक'** विशेषण कहते हैं; जैसे-

- उसे एक किलो गेहूं चाहिए।
- पैंट के लिए दश मीटर कपड़ा चाहिए।
- गीता 5 कि.मी. आगे रहती है।
- मैं प्रतिदिन **चार लीटर** दूध लाता हूँ।
- वह बाद में **कुछ** घी खाता है।

यहाँ **'एक किलो, दस मीटर, पांच कि.मी., चार लीटर'** दूध का माप है, **'कुछ'** घी की माप तौल की जाती है। इन सभी वस्तुओं को गिना नहीं जा सकता, केवल मापा जा सकता है। इसलिए ये परिमाणवाचक विशेषण हैं। -

परिमाणवाचक विशेषण दो प्रकार के होते हैं-

(A) निश्चित परिमाणवाचक- जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम के निश्चित मात्रा या परिमाण का बोध कराते हैं, उन्हें 'निश्चित परिमाणवाचक विशेषण' कहते हैं; **जैसे-** पाँच किलो, दस क्विंटल, एक तोला सोना, दो मीटर कपड़ा, दस ग्राम सोना, एक लीटर दूध, एक किलो आलू इत्यादि।

(B) अनिश्चित परिमाणवाचक- जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम के निश्चित परिमाण का नहीं अपितु अनिश्चित परिमाण का बोध कराते हैं, उन्हें 'अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं; **जैसे-** कुछ आम, थोड़ा दूध, बहुत घी, कुछ शहद, बहुत पानी, कम चीनी, ढेरसारा मक्खन, पचासों मन गेहूँ, तनिक अचार, जरा-सा नमक इत्यादि।

3. संख्यावाची विशेषण

जो विशेषण किसी व्यक्ति, प्राणी अथवा वस्तु (संज्ञा या सर्वनाम) की संख्या से सम्बन्धित् विशेषता का बोध कराएँ, उन्हें 'संख्यावाची विशेषण' कहते हैं; **जैसे-** तीसवाँ, साढ़े चार, प्रत्येक, कम, सब, इकहरा, तिहरा, दोहरा, सतसई, काफी, अधिक, अक्सर, दूसरी बार इत्यादि।

संख्यावाचक विशेषण मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं-

1. निश्चित संख्यावाचक
2. अनिश्चित संख्यावाचक

1. निश्चित संख्यावाचक - जो विशेषण निश्चित संख्या का बोध कराते हैं, उन्हें निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं; जैसे- एक, दो, तीन, पहला, दूसरा, तीसरा, इकहरा, दोहरा, दोनों, तीनों, चारों, पाँचों, पाँच छात्र, सात किताबें इत्यादि। निश्चित संख्यावाचक विशेषण कई प्रकार के होते हैं-

(i) गणनावाचक- जिनके अंक या गिनती का ज्ञान हो; जैसे- एक, पाँच, दस, बारह, आधा, चौथाई, सवा पाँच, साढ़े सात इत्यादि। गणना वाचक विशेषण के भी दो भेद किए जा सकते हैं- पूर्ण संख्यावाचक विशेषण- एक, दो, तीन इत्यादि पूर्ण संख्याबोधक है और अपूर्ण संख्यावाचक विशेषण- (आधा), (सवा), (डेढ़), (पौने दो), (ढ़ाई), (साढ़े तीन) इत्यादि विशेषण अपूर्ण संख्याबोधक है।

(ii) क्रमवाचक- जिस विशेषण से क्रम का ज्ञान हो, उसे 'क्रमवाचक विशेषण' कहते हैं; जैसे- पहला, तीसरा, चौथा, छठा, आठवाँ इत्यादि

(iii) आवृत्तिवाचक- जिस विशेषण से किसी संज्ञा या सर्वनाम की एकल या गुणन का बोध हो अथवा जिससे यह ज्ञात होता है कि संज्ञा या सर्वनाम कितने गुना है; जैसे- दुगुना, चौगुना, पाँच गुना, इकहरा, दोहरा, तिहरा इत्यादि।

(iv) समुदायवाचक- जिस विशेषण कुछ संख्याओं के इकट्ठे समूह अथवा समुदाय का बोध हो, उसे 'समुदायवाचक विशेषण' कहते हैं; जैसे- दोनों, तीनों, पाँचों, आठों, दसों, तीनों के तीनों, सभी, सब- के-सब इत्यादि।

(v) समुच्चयवाचक- संज्ञा या सर्वनाम के किसी प्रचलित समुच्चय को प्रकट करने वाले विशेषण समुच्चयवाचक कहलाते हैं; जैसे- **दर्जन**, युग्म, जोड़ा, पच्चीसी, चालीसा, शतक, सैकड़ा, सतसई इत्यादि।

(vi) प्रत्येक बोधक या भिन्नतावाचक - जो विशेषण भिन्नता दर्शाते हुए संज्ञा या सर्वनाम (विशेष्य) की विशेषता बतलाते हैं, उन्हें प्रत्येक बोधक संख्यावाची विशेषण' कहते हैं; जैसे- प्रत्येक, हरेक, हरमास, हर वर्ष, एक-एक, चार-चार इत्यादि.

2. अनिश्चित संख्यावाचक- जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की किसी निश्चित संख्या का ज्ञान नहीं कराते, बल्कि उसका अस्पष्ट अनुमान प्रस्तुत करते हैं, उन्हें 'अनिश्चित संख्यावाचक' विशेषण कहते हैं; जैसे- कुछ छात्राएँ, थोड़े-से-गाँव, अधिक लड़के, कई लोग, बहुत-सा पैसा, हजारों आदमी, पाँच-छः दर्शक इत्यादि।

वाक्य प्रयोग-

अध्याय-3

तत्सम - तद्भव

तत्सम - तद्भव

किसी भी देश की भाषा में परिवर्तनशीलता का गुण होता है। समय से साथ विश्व की सभी भाषाओँ के रूप परिवर्तित होते रहते है। हिंदी भी उसी परिवर्तनशीलता से आच्छादित है। संस्कृत के अनेक शब्द पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, अवहट्ट से होते हुए हिंदी में आये है। इनमें से कुछ शब्द संस्कृत में जैसे थे वैसे ही ले लिए गए और कुछ समय व स्थान के साथ परिवर्तित हो गये, जो मूल रूप में आये वह संस्कृत और जो विकृत रूप में धारण कर लिए वह तद्भव कहलाये।

हिंदी शब्द कोष में शब्दों के अनेक प्रयोग देखे जाते है, इन शब्दों के स्थान व उत्पत्ति के अनुसार 5 भागों/प्रकारों में बांटा जा सकता है. जैसे - तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशज/आगत और संकर शब्द अदि।

तत्सम : तत्सम (तत् + सम = उसके समान) आधुनिक भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त ऐसे शब्द जिनको संस्कृत से बिना कोई रूप परिवर्तन के लिया गया है उन्हें तत्सम कहते हैं। भारत की विभिन्न भाषाओं जैसे हिन्दी, बांग्ला, कोंकणी, मराठी, गुजराती, पंजाबी, तेलुगू, कन्नड, मलयालम, सिंहल आदि में बहुत से शब्द संस्कृत से सीधे ले लिए गये हैं क्योंकि इनमें से कई भाषाएँ संस्कृत से जन्मी हैं। अत: संस्कृत के ऐसे शब्द जिन्हें हम ज्यों का त्यों हिन्दी भाषा में प्रयोग करते हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं. जैसे- अग्नि, वायु, माता, पिता, प्रकाश, पत्र सूर्य आदि. तत्सम शब्द में ध्वनि परिवर्तन नहीं होता है। जैसे – आम्र, अग्नि, अमूल्य, क्षेत्र, अज्ञान, अन्धकार, चंद्र, बांग्ला आदि।

तद्भव : तत्सम शब्द समय और परिस्थितियों में परिवर्तन होने के कारण जो शब्द बने हैं उन्हें तद्भव कहते हैं। तद्भव का शाब्दिक अर्थ है 'उससे जन्मा' (तत् + भव = उससे उत्पन्न), अर्थात जो उससे अर्थात संस्कृत से उत्पन्न हुए हैं। संस्कृत शब्द से उत्पन्न -पाली-प्राकृत-अपभ्रंश-अवहट्ट-पुरानी हिन्दी-हिंदी में आते हैं, उन्हें तद्भव शब्द कहते हैं. इससे भी बिगड़ा रूप देशज हो जाता है । तद्भव शब्द को साहित्यिक भाषा में अपभ्रंश भी कहते हैं. जैसे – उजला, हाथ, आँख, इतवार, पानी आदि.

संस्कृत से तद्भव का विकास इससे भी बिगड़ा रूप देशज हो जाता है.

	संस्कृत	प्राकृत	हिंदी
1.	उज्ज्वल	उज्जल	उजला
2.	कर्पूर	कप्पूर	कपूर
3.	अग्नि	अग्गि	आग
4.	संध्या	संझा	साँझ

देशज - (देश+ज) अर्थात् देश में जन्मा, अत: ऐसे शब्द जो क्षेत्रीय प्रभाव के कारण परिस्थिति व आवश्यकतानुसार बनकर प्रचलित हो गये हैं उन्हें देशज कहते है. इन शब्दों का व्याकरण से कोई संबंध नहीं है. यह अपने ही देश में बोलचाल में सुविधा हेतु बने हैं. लोकभाषाओं में इनकी अधिकता है, जैसे- गड़बड़, थैला, पेट, पगड़ी, लोटा, टांग, जड़ावर, आपुस, फुनगी, खिचड़ी, कलाई, डिबिया, बिनना, हाड़, चोटिया, डिब्बा, कलूटा, पटाखा आदि.

विदेशज/आगत - (विदेश+ज)= 'विदेश में जन्मा', आगत शब्द का अर्थ है आया हुआ. हिंदी ने अनेक शब्द ऐसे हैं जो हैं तो विदेशी मूल के पर परस्पर संपर्क के कारक यहाँ प्रचलित हो गये हैं, जिन्हें विदेशज शब्द कहते हैं. विदेशी शब्दों में – अंग्रेजी, अरबी, फारसी, तुर्की, पुर्तगाली, फ्रेंच, जापानी आदि हैं, विदेशज शब्दों में फारसी की अधिकता है. हिंदी में फ़ारसी शब्दों उपसर्ग (बे. गैर) और प्रत्यय (ई, गिरी, दान, दार, बंद) भी अपनाये गये है. हिंदी ने कुछ अंग्रेजी के अनेक शब्दों को कुछ हेर-फेर के साथ अपना लिया है. जैसे- लालटेन (लैंटर्न), बोतल (बाटल), कप्तान (कैप्टन), अफसर (अफीसर), अस्पताल (हॉस्पिटल), गिलास (ग्लास)

अरबी - अजीब, अदालत, असर, आदमी, औरत इनाम, इज्जत, इमान, उम्र, एहसान, औसत, कमाल, कर्ज, किस्मत, कीमत, किताब, कुर्सी, जिस्म, जुलूस, जवाब, मुकदमा, बहस, फैसला, जहाज, तमाम तारीख, तरक्की, दिमाग, नतीजा, नक़ल, नजर, फ़िक्र, बांकी, मुहावरा, मौसम, लिफाफा, शराब, हक, हिम्मत, हाजिर, हुक्म, हैजा, हौसला, हकीम, हलवाई. **अरबी से हिंदी में आये कुछ परिवर्तित शब्द भी है –**

मैसिम	–	मौसम
देहात	–	दिहात
आतशबाजी	–	आतिशबाजी
खुराक	–	खुराक

फारसी - सरकार, साल, शादी, लेकिन, लगाम, रंग, यार, याद, मजदूर, मकान, बुखार, बारिश, पुल, परदा, पजामा, नापसंद, दीवार, तमाशा, तनखाह, ताजा, दफ्तर, दरबार, दवा, दिल, जलेबी, जहर, जिंदगी, जागीर, जादू, जुरमाना, गवाह, गिरफ्तार, गुलाब, चादर, चालाक, चश्मा, चेहरा, गरम, खुराक, खुद, कुश्ती, कारीगर, किशमिश, कमीना, आवाज, उम्मीद, आमदनी, आराम, आफ़त, आतिशबाजी.

अंग्रेजी - स्टेशन, आफिस, रेल, ट्रेन, टिकट, क्लर्क, यूनियन, इंजन, बैटरी, साइकिल, स्कूटर, मोटर, कार, बस, बिस्कुट, चाकलेट, टॉफी, माचिस, केक, गैस, कप, प्लेट, पैंट, पतलून, कोट, कालर, प्लेग, मलेरिया, कॉलरा, (अन्य बीमारी) आपरेशन, नर्स, डॉक्टर, कंपाउंडर, कॉलेज, अस्पताल, स्कूल, कॉपी, पेपर, पेन, पेंसिल, पिन, वोट, कलेक्टर, पुलिस, जज, मजिस्ट्रेट, कोर्ट, अपील.

बछड़ा	वत्स	मिठाई	मिष्ठान्न	शक्कर	शर्करा
बहू	वधू	भूखा	बुभुक्षित	लौंण	लवण
बड़	वट	भस्मि	भस्म	लुनाई	लवणता
बुड्ढा	वृद्ध	मोती	मौक्तिक	लीपना	लेपन
बरात	वरयात्रा	मीत	मित्र	सरवर	सरोवर
बहरा	बधिर	मेह	मेघ	सास	श्वश्रू
बहिन	भगिनी	मौत	मृत्यु	लुहार	लौहकार
बारह	द्वादश	भौं, भोंह	भ्रू	लोहा	लौह
बींट	विष्ठा	भौंरा	भ्रमर	सौत	सपत्नी
बैंगन	वार्ताक	मूसल	मुषल	सेंध	सन्धि
बैन	वाणी	मैल	मल	लोमड़ी	लोमशा
बैल	बलीवर्द	मोर	मयूर	लौंग	लवंग
बिच्छु	वृश्चिक	भीख	भिक्षा	लाज	लज्जा
ब्याह	विवाह	भिखारी	भिक्षुक	लखन	लक्ष्मण
बगुला	वक	मकड़ी	मर्कटी	साँस	श्वास
बाँस	वंश	मारग	मार्ग	सूत	सूत्र
बाँझ	बन्ध्या	मुँह	मुख	सुनार	स्वर्णकार
बाँसुरी	वंशी	महीना	मास	सुहाग	सौभाग्य
बाघ	व्याघ्र	मनिहार	मणिकार	लाख	लक्ष
बाँध	बन्ध	मरघट	मृतघट्ट	सूअर	शूकर
बीना	वीणा	मसहरी	मशकहरी	सच	सत्य
बालू	बालुका	मसान	श्मशान	साग	शाक
बरन	वर्ण	मिर्च	मरीच	लच्छन	लक्षण
बैरबानी	वीरवर्णिनी	मूँछ	श्मश्रु	ससुर	श्वसुर
बिगाड़	विकार	रस्सी	रज्जु	सराप/श्राप	श्राप
भगत	भक्त	रानी	राज्ञी	रीता	रिक्त
भला	भद्र	राजपूत	राजपुत्र	सजन/साजन	स्वजन
भाप	वाष्प	रोना	रुदन	रीछ	ऋक्ष
भतीजी	भ्रातृजा	रास	राशि	सेज	शय्या
भानजा	भागिनेय	रात	रात्रि	साँवला	श्यामल
भालू	भल्लुक	राखी	रक्ष	सूखा	शुष्क
भाई	भ्राता	श्रेष्ठी	शुण्ड	सुआ	शुक
भौजाई	भ्रातृजाया	सूरज	सूर्य	साली	श्याली
सेठ	श्रेष्ठी	हल्दी	हरिद्रा	हँसी	हास्य
सूना	शून्य	हरा	हरित	हिय	हृदय
सींग	श्रृंग	हरख	हर्ष	होली	होलिका
सीख	शिक्षा	हाट	हट्ट	हाँड़ी	हण्डी
हिंडोरा, हिंडोला	हिन्दोला	हाथी	हस्ती	हिरन	हरिण
हीरा	हीरक	हाथ	हस्त	हुलास	उल्लास

Lakshya IAS Academy Lucknow, Uttar Pradesh

प्रैक्टिस प्रश्न कोष

1. 'चौथा' का तत्सम शब्द है-
(a) चतुष्पद
(b) चतुष्क
(c) चतुष्काठ
(d) चतुर्थ
उत्तर (d)

2. निम्नलिखित में 'हस्ती' किस शब्द का तत्सम रूप
(a) हाथ
(b) हार
(c) हाथी
(d) हँसी
उत्तर (c)

3. निम्नलिखित में 'तत्सम' शब्द है-
(a) पंक्ति
(b) पंख
(c) पंदरह
(d) पंगत
उत्तर (a)

4. निम्नलिखित शब्दों में से तत्सम शब्द है-
(a) जोगी
(b) जोबन
(c) जमाई
(d) यौवन
उत्तर (d)

5. निम्नांकित में से तद्भव शब्द चुनिए-
(a) बलवान
(b) बाँझ
(c) चमचा
(d) आसमान
उत्तर (b)

6. घोड़ा का उपयुक्त तत्सम शब्द है
(a) अश्व
(b) घोटक
(c) तुरंग
(d) बाजी
उत्तर (b)

'7' का तद्भव रूप है-
(a) कपट
(b) कारपेट
(c) कपूर
(d) कपड़ा
उत्तर (d)

8. निम्नलिखित में से तद्भव शब्द है-
(a) अंगना
(b) गयंद
(c) अंगी
(d) वानर
उत्तर (b)

9. 'गोधूम' का तद्भव शब्द है-
(a) गोत
(b) गोद
(c) गेहूँ
(d) गोह
उत्तर (c)

10. निम्नलिखित में से तद्भव शब्द है-
(a) नग्न
(b) दक्षिण
(c) द्राक्षा
(d) दादी
उत्तर (d)

11. निम्नलिखित में से 'तत्सम' शब्द है-
(a) दही
(b) जीर्ण
(c) गयंद
(d) गाहक
उत्तर (b)

12. 'अगहन' का तत्सम रूप कौन-सा है?
(a) अग्रहायण
(b) अगहण
(c) आग्रहण
(d) अग्रासन
उत्तर (a)

13. निम्नलिखित में से 'तद्भव' शब्द है-
(a) चतुर्दश
(b) चतुर्थ
(c) चौदह
(d) चत्वारि
उत्तर (c)

14. आभ्यंतर' का तद्भव शब्द है
(a) अन्दर
(b) भीतर
(c) बाहर
(d) गहरा
उत्तर (b)

15. 'कर्पट' का तद्भव रूप है-
(a) कपट
(b) कारपेट
(c) कपूर
(d) कपड़ा
उत्तर (d)

16. 'परिवा' का तत्सम रूप है
(a) परवा
(b) परेवा
(c) प्रतिपदा
(d) पड़ीवा
उत्तर (c)

17. निम्नलिखित में से 'तत्सम' शब्द है-
(a) उछाह
(b) उजला
(c) उल्लू
(d) ओष्ठ
उत्तर (d)

18. निम्नलिखित तत्सम तद्भव शब्दों का संगत युग्म है-
(a) खर्पट-खोपड़ी
(b) सत्तु-सत्य
(c) पर्यंक-पलंग
(d) घोटक-घड़ा
उत्तर (c)

19. निम्नलिखित में से एक 'तद्भव' शब्द है-
(a) आँसू
(b) एकत्र
(c) वानर
(d) उच्च
उत्तर (a)

20. 'कपित्थ' का तद्भव शब्द है-
(a) कपूर
(b) कैचा
(c) केला
(d) खजूर
उत्तर (b)

तरुण	वृद्ध	आग्रह	दुराग्रह	आवाहन	विसर्जन
शठता	सज्जनता	श्याम	श्वेत	शेष	अशेष
वैमनस्य	सौमनस्य	विभव	पराभव	मनसा	कर्मणा
यद्यपि	तथापि	यादृश	तादृश	मनुज	दनुज
मतैक्य	मतभेद	मंथर	क्षिप्र	रोहण	अवरोहण
संकलन	व्यकलन	योग्य	अयोग्य	योग	वियोग
टीका	भाष्य	घटक	समुदाय	झंकृत	निस्तब्ध
झंझा	तूफ़ान	तिमिर	ज्योति	अधोमुखी	ऊर्ध्वमुखी
अस्त	उदय	निर्माण	विध्वंश	महायोगी	महाभोगी
लोक	परलोक	संपद	विपद	सूक्ष्म	विराट
छिन्न	संलग्न	छादन	प्रकाशन	आचार	अनाचार
उज्जवल	धूमिल	चौर	अचौर	ईश	अनीश
मल	अमल	ईश्वर	जीव/अनीश्वर	पतिव्रता	कुल्टा
कोप	कृपा	आडम्बर	सादगी	एक	अनेक
संन्यासी	गृहस्थ/गृही	स्पृश्य	अस्पृश्य	अगाध	छिछला
सनातनी	प्रगतिवादी	लुभावना	घिनौना	प्राची	प्रतीची
उपमा	व्यतिरेक	स्थावर	जंगम	वक्र	ऋजु

एक शब्द के एक से अधिक विलोम शब्द

शब्द	विलोम-1	विलोम-2	विलोम-3
• मधुर	अमधुर	कटु	कर्कश, तीक्ष्ण
• कृश	पुष्ट	स्थूल	पीन
• पापी	निष्पाप	पुण्यवान	पुण्यशील
• परुष	अपरुष	कोमल	अपोषित
• अधिक	न्यून	अल्प	थोड़ा
• प्रभावी	अप्रभावी	निष्अभावी	प्रभावशून्य
• लघु	गुरू	दीर्घ	महत
• बनना	मिटना	बिगड़ना	टूटना
• अज्ञ	विज्ञ	प्रज्ञ	सर्वज्ञ
• अल्प	बहु	प्रचुर	महा
• उपयोग	दुष्प्रयोग	दुरुपयोग	अनुपयोग
• आकर्षक	अनाकर्षक	अपकर्षक	विकर्षक
• उच्च	निम्न	नीचा	अनुच्च
• भाग्यवान	अभागा	बदकिस्मत	हतभाग्य
• आदृत	अनादृत	निरादृत	तिरस्कृत
• उदार	कृपण	अनुदार	कंजूस
• कृष्ण	शुक्ल	श्वेत	धवल
• महत्वपूर्ण	अमहत्वपूर्ण	गौण	महत्वहीन
• उर्वर	अनुर्वर	बंजर	ऊसर
• कृत्रिम	प्रकृत	अकृत्रिम	प्राकृतिक
• पाश्चत्य	पूर्वीय	पौरस्त्य	पौर्वात्य
• कंजूस	उदार	मुक्तहस्त	शाहखर्च
• मिलन	विच्छेद	विछोह	विरह
• आरम्भ	अंत	समापन	समाप्त
• अविचल	डांवाडोल	निचल	ढुलमुल
• कुण्ठित	अकुण्ठित	धारदार	तीखा
• मुख	प्रतिमुख	विमुख	पृष्ठ
• भाव	आभाव	कुभाव	दुर्भाव

• स्वामी	दास	भृत्य	सेवक
• मुलायम	कठोर	कड़ा	सख्त
• वयस्क	अवयस्क	अल्पवयस्क	नाबालिग
• स्वेत	अश्वेत	श्याम	कृष्ण
• स्वादिष्ट	स्वादहीन	नि:स्वाद	बेमजा
• भयभीत	निर्भय	निर्भीक	अभय, निडर
• सफल	असफल	निष्फल	विफल
• भरा	खाली	रिक्त	छूछा
• भाग्यवान	अभागा	हतभाग्य	बदकिस्मत
• मंद	तीव्र	द्रुत	अमंद, तेज
• क्षुद्र	विराट	महान	विशाल
• प्रसन्न	अप्रसन्न	खिन्न	दु:खी
• सुंदर	असुन्दर	कुरूप	भद्दा, भोडा
• बोधगम्य	अबोधगम्य	गूढ़	दुरूह
• मधुर	अमधुर	कटु, तीक्ष्ण	कर्कश
• अगम	सुगम	गम	
• अंतिम	आरंभिक	अनन्तिम	
• अद्यतन	अन्द्यत्र	पुरातन	
• अग्र	पश्चात्	पश्च	
• अनन्त	सांत	ससीम	
• अधीन	अनधीन	स्वतंत्र	
• अल्पायु	दीर्घायु	चिरायु	
• अटल	ढुलमुल	डांवाडोल	
• अनुकूल	प्रतिकूल	अननुकूल	
• आविर्भाव	तिरोभाव	अवसान	
• आदर	अनादर	निरादर	
• अन्यायी	न्यायी	न्यायशील	
• अन्धकार	प्रकाश	आलोक	

Lakshya IAS Academy Lucknow, Uttar Pradesh

अध्याय – 5

अनेक शब्दों के लिए एक

कम शब्दों में अधिक से अधिक भावों की अभिव्यक्ति रचनाकार की भाषा, प्रयोग, पटुता और शैलीगत सुघड़ता की परिचायक होती है, उसे गागर में सागर भरन कहते है। संधि, समास, प्रत्यय और उपसर्ग में अक्षर को जोड़कर जिस तरह शब्दों को सारगर्भित किया जाता है उसी प्रकार अनेक शब्दों को जोड़ एक शब्द का निर्माण किया जाता है ।

"भाषा की सुदृढ़ता, भावों की गंभीरता और चुस्त शैली के लिए यह आवश्यक है कि लेखक शब्दों (पदों) के प्रयोग में संयम से काम ले, ताकि वह विस्तृत विचारों या भावों को 'कम से कम' शब्दों में व्यक्त कर सके। वाक्यांशों की जगह एक शब्द प्रयोग करने से वाक्य रचना में संक्षिप्तता, सुंदरता और गंभीरता आ जाती है।

अच्छी रचना, लेख, अभिलेख के लिए अनेक शब्दों के लिए एक शब्द बहुत ही आवश्यक है, कम से कम शब्दों में अपने विचार प्रकट किये जायें भाषा में यह सुविधा भी होनी चाहिए की वक्ता या लेखक कम से कम शब्दों में लिख कर या बोल कर अपने विचार अभिव्यक्त कर सके अनेक शब्द के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग वाक्य रचना में संक्षिप्तता, सुन्दरता, तथा गंभीरता आ जाती है.

अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द के प्रयोग से रचना में कसावट आती है और अभिव्यक्ति भी प्रभावशाली होती है। अच्छी रचना के लिए भी यह आवश्यक है की कम से कम शब्दों में अपने विचार प्रगट किए जाएँ। अनेक शब्दों के लिए एक शब्द को अंग्रेजी में 'One Word Substitution' कहते हैं। समास, उपसर्ग और प्रत्यय आदि की सहायता से वाक्य खंड को एक शब्द में बदला जाता है, जैसे दशानन, अतिथि, अल्पज्ञ, अजन्म,अंत्यज आदि.

अनेक शब्दों के बदले एक शब्द' के प्रयोग से समय और श्रम की बचत होती है। साथ ही इससे यह भी परिलक्षित होता है कि भाषा पर आपकी कैसी पकड़ है। इसके लिए विशेषतः संधि और समास की जानकारी आवश्यक है, तभी आप ऐसे शब्द बना सकते हैं। ऐसे शब्दों की एक विस्तृत सूची नीचे प्रस्तुत है. अप्रमेय

अति महत्वपूर्ण वाक्यांश
जो बार-बार प्रतियोगी परीक्षाओं में पूंछे जाते है

वाक्य	एक शब्द
सुबह के चार बजे के समय को	ब्रह्ममुहूर्त
रात्रि का अंतिम/चौथा प्रहर	ब्रह्ममुहूर्त
सूर्योदय/अरुणोदय से पहले के समय को	ऊषाकाल
सूर्य की लालिमा दिखने के समय को	अरुणोदय काल
सूर्य के निकलने के समय को	सूर्योदय काल
दोपहर के पहले के समय को	पूर्वाह्न
दोपहर का समय	मध्याह्न
दोपहर के बाद के समय को	अपराह्न
सूर्यास्त का समय	संध्याकाल
संध्या और रात्रि के बीच के समय को	गोधूलि
रात्रि का प्रथम प्रहर	प्रदोष
रात्रि का दूसरा प्रहर	द्वियामा
मध्य रात्रि (अर्द्धरात्रि) का समय	निशीथ
रात्रि का तीसरा प्रहर	त्रियामा
अँधेरी रात	तमिस्रा
तारों-भरी रात	विभावरी
चाँदनी रात	शर्वरी
जो कुछ नहीं जनता है	अज्ञ/अज्ञानी/ अनभिज्ञ
जो जानता हो	अभिज्ञ/विज्ञ
जिसका जन्म शरीर से हुआ हो	पिण्डज
जिसका जन्म अंडे से हुआ हो	अण्डज
जो क्षमा न किया जा सके	अक्षम्य
इंद्रियों को जीत लेने वाला	इंद्रियजित
इंद्रियों को वश में रखने वाला	इंद्रियजित
जो इंद्रियों पर विजय प्राप्त कर चूका हो	इंद्रियजित
इंद्र को जीत लेने वाला	इंद्रजित
जो इंद्रियों से परे हो	इंद्रियातीत
जो इंद्रियों की पहुच से बाहर हो	इंद्रियातीत
इंद्रियों पर किया जाने वाला वश	इन्द्रियनिग्रह
जिसका अनुभव इन्द्रियों द्वारा न हो सके	अतीन्द्रिय
जिसका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा हो सके	गोचर
पत्ते के बनी हुई कुटी	पर्णकुटी
पलकों को गिराये बगैर	अनिमेष
बिना पलक गिराये	निर्निमेष
जहां सेना रहती है	सैन्यावास
जो अधिक बोलता हो	वाचाल
जो नीतिवान हो	नीतिज्ञ

- जंगल में लगी आग — दावानल /दावाग्नि
- समुद्र में लगी आग — बड़वानल
- जो पहले कभी नहीं सुना गया — अनुश्रुतपुर्व
- जो धरती फोड़कर जन्मता हो — उद्भिज
- बारह से 16 वर्ष की नाइका — किशोरी
- जिसकी आशा न की गयी हो — आशातीत
- गोद लिया हुआ — दत्तक
- जो किसी भी तरह उलंघन न किया जा सके — अनुलंघनीय
- जो पेट के बल चलता हो — उरग
- जो आँखों से सुनता हो — चछुस्रावा
- जिसको छोड़ा नहीं जा सकता हो — अत्याज्य
- जो आधी अवधि तक काम करता है — अर्द्धकालिक
- जो कुछ समय के लिए नियुक्ति किया गया हो — तदर्थ
- जो किसी की एवज में कार्यकर रहा हो — स्थानापन्न
- जो किसी अन्य व्यक्ति के स्थान पर कार्यरत है — स्थानापन्न
- जो वेतन लिए बिना कार्य कर रहा हो — अवैतनिक
- ऐसा ग्रहण जिसमें सूर्य पूरा ढक जाये — खग्रास
- ऐसी जीविका जो आकस्मिक हो, — आकाशवृत्ति
- भगवान के सहारे अनिश्चित आय — आकाशवृत्ति
- कही गई बात को बार-बार कहना — पिष्टपेषण
- जो आसानी से प्राप्त किया जा सके — सहजलब्ध
- पृथ्वी से सम्बद्ध — पार्थिव
- जो अभी अभी उत्पन्न हुआ हो — सद्यःप्रसूता
- अपने को धोखा देना — आत्मवंचना
- अपने को धोखा देने वाला — आत्मवंचक
- वह स्त्री जिसका पति परदेश से लौटा हो — आगतपतिका
- वह स्त्री जिसका पति परदेश से लौटने वाला हो — अगमिस्यतपतिका
- जिस स्त्री के पुत्र व पति न हो — अवीरा
- जिस स्त्री के पुत्र पति हों — पुरंद्री
- जो स्त्री के वाशिभुत हो — स्त्रैण
- जिसे पति ने छोड़ दिया हो — परित्यक्ता
- वह स्त्री जिसका पति दूसरा विवाह कर ले — अध्यूढ़ा
- किसी पुरूष से प्रेम करने वाली अविवाहित स्त्री — अनूढ़ा
- दूसरे की विवाहित स्त्री — अन्योढ़ा
- जो स्त्री सूर्य भी न देख सके — असूर्यापश्या
- बुरे आचरण वाली स्त्री/ दुराचारिणी स्त्री — कुलटा
- सुन्दर और लम्बे बड़े बालों वाली स्त्री — केशिनी
- हाथी की तरह चलने वाली स्त्री — गजगामिनी
- वह स्त्री जिसके मूछ-दाढ़ी निकली हो — ऋषभी
- जिससे विवाह का वचन दिया गया हो — वाग्दत्ता
- संतान उत्पत्ति में अक्षम स्त्री — बंध्या
- बच्चा जनने वाली स्त्री — प्रसूता
- दूसरे पुरुष से प्रेम करने वाली स्त्री — परकीया
- थोड़े दिन पहले ही जिसका विवाह हुआ हो — नवोढ़ा
- जिसका पति जीवित हो — सधवा
- जिसकी पत्नी मर गयी हो — विधुर
- जिस पुरुष की पत्नी न हो — अपत्नीक
- सुन्दर अंगो वाली स्त्री- — अंगना
- दूसरों के लिए अपने सुखों का त्याग — आत्मोत्सर्ग
- पर्वत के नीचे की समतल भूमि — उपत्यका
- पर्वत के ऊपर की समतल भूमि — अधित्यका
- युद्ध करने की इच्छा — युयुत्सा
- युद्ध करने की इच्छा हो जिसमें — युयुत्सु
- यज्ञ कराने वाला — याज्ञिक
- मोक्ष की कामना/इच्छा करने वाला — मुमुक्षु/मुमुक्ष
- मरने की कामना/इच्छा — मुमूर्षा
- जो मरने की कामना करता हो — मुमुर्षु
- सबसे आगे चलने वाला सैन्यदस्ता — हरावल
- हाथी की पीठ पर रक्खा जाने वाला आसन — हौदा
- दीन-दुखियों को भोजन देने की व्यवस्था — सदावर्त
- उत्तराधिकार में प्राप्त संपत्ति — रिक्थ
- नपा-तुला भोजन करने वाला — मिताहारी
- जिसके हृदय पर आघात हुआ हो — मर्माहत
- मदिरा-पान का आदि — मद्यप
- सूर्योदय के पूर्व का समय — ब्रम्ह्ममुहूर्त
- जानने की इच्छा — जिज्ञासा
- किसी को जीतने की चाह — जिगीषा
- अधिक समय तक जीने की इच्छा — जिजीविषा
- जीतने की इच्छा रखने वाला — जिगीषु
- भोजन करने की इच्छा — जिघत्सा
- छोटे से छोटे दोष को खोजने वाला — छिद्रान्वेषी
- जो अपने स्थान से हटा हुआ हो — च्युत
- ऊपर की और उछाला/फेंका हुआ — उत्क्षिप्त
- जिसे यह न पता हो, क्या करूँ क्या न करूँ — किंकर्तव्यविमूढ़
- किये गए उपकार को मानने वाला — कृतज्ञ
- किये गए उपकार को न मानने वाला — कृतघ्न
- जो केंद्र की ओर उन्मुख/ झुका हो — केंद्राभिसारी/ केंद्राभिमुख
- जो केंद्र से हटकर दूर जाता हो — केन्द्रापसारी
- जिसके चूड़ा/ बालों में चंद्रमा हो — चंद्रचूड़
- जिसके सर पर चंद्रमा हो — चंद्रशेखर
- जो चक्र को धारण करता है — चक्रधर
- जिसके हाथ में चक्र हो — चक्रपाणी
- तैरकर पार करने की इच्छा रखने वाला — तितीर्षु
- तैरकर पार करने की इच्छा — तितीर्षा
- किसी काम को चित्त लगाकर करने वाला — दत्तचित्त
- छुटकारा दिलाने वाला — त्राता
- जो आँखों से सम्बंधित हो — चाक्षुष
- आंखो से सुनने वाला — चक्षुश्रावा
- जहाँ जाना कठिन हो — दुर्गम/दुर्गम्य
- जिसे जीतना कठिन हो — दुर्जेय
- जिसका दमन करना कठिन हो — दुर्दम्य/दुर्दम
- जो कठिनता से जाना जा सके — दुर्ज्ञेय
- जिसे निवारण/रोकना कठिन हो — दुर्निवार
- जो कठिनाई से जाना जा सके — दुर्बोध

नियम –3 : 'छ' और 'क्ष' की अशुद्धियाँ- 'छ' एक स्वतन्त्र व्यंजन है, तो 'क्ष' संयुक्त व्यंजन यह क् और ष् के मेल से बना है। 'क्ष' संस्कृत में अधिक प्रयुक्त होता है वह वर्तनी शुद्ध होती है जैसे-शिक्षा, दीक्षा, समीक्षा, प्रतीक्षा, परीक्षा, क्षत्रिय, निरीक्षक, अधीक्षक, साक्षी, क्षमा, क्षण, अक्षय, तीक्ष्ण, क्षेत्र, क्षीण, नक्षत्र, अक्ष, समक्ष, क्षोभ इत्यादि।

नियम – 4 : 'ब' और 'व' की अशुद्धियाँ- 'ब' और 'व' के प्रयोग में प्रायः अशुद्धियाँ होती हैं, इन अशुद्धियों का कारण है अशुद्ध उच्चारण। शुद्ध उच्चारण के आधार पर ही 'ब' और 'व' का भेद किया जाता है। ठेठ हिन्दी/देशज में 'ब' वाले शब्दों की संख्या अधिक है, जबकि 'व' वाले शब्द संस्कृत में बहुत है।

इनकी पहचान बहुत सावधानी से करना होगा - संस्कृत में शुद्ध शब्द 'ब' वाले कुछ शब्द हैं- बन्ध, बन्धु, बर्बर, बलि, बहु, बाधा, बीज, बृहत्, ब्रह्म, ब्राह्मण, बुभुक्षा। शुद्ध संस्कृत के 'व' वाले प्रमुख शब्द हैं- वहन, वंश, वाक्, वक्र, वंचना, वत्स, वदन, वधू, वचन, वपु, वर्जन, वर्ण, वन्य, व्याज, व्यवहार, वसुधा, वायु, विलास, विजय।

अशुद्धियों के प्रकार – विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में कई प्रकार की अशुद्धियों से प्रश्न बनते है, जो निम्नलिखित है –

1. संज्ञा सम्बन्धी अशुद्धि
2. सार्वनामिक अशुद्धि
3. लिंग सम्बन्धी अशुद्धि
4. विशेषण सम्बन्धी अशुद्धि
5. क्रिया-सम्बन्धी अशुद्धि
6. अव्यय सम्बन्धी अशुद्धि
7. वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धि

अति महत्वपूर्ण
(वर्तनी संबंधी/शाब्दिक अशुद्धियाँ)

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
लीजिये	लीजिए	सद्रिश	सदृश्य	दुन्दुभी	दुन्दुभि
लिये	लिए	मनःवांक्षित	मनोवांक्षित	सम्वाद	संवाद
अहिल्या	अहल्या	निष्कलश	निष्कलुष	सरोजनी	सरोजिनी
आई, गई	आयी, गयी	सहृदय	सहृदय	विरहणी	विरहिणी
आये, गये,	आए, गए	निर्पेक्ष	निरपेक्ष	गृहणी	गृहिणी
हुये, हुवे	हुए, हुई	जगतगुरु	जगद्गुरु	अंताक्षरी	अन्त्याक्षरी
दीजिये	दीजिए	उच्चश्रृंखल	उच्छृंखल	बदाम	बादाम
अंतर्ध्यान	अंतर्धान	केन्द्रीयकरण	केन्द्रीकरण	सदोपदेश	सदुपदेश
आव्रजन	आवृजन	कवित्री	कवयित्री	हस्ताक्षेप	हस्तक्षेप
अनादृत	अनादृत	गीरवाण	गीर्वाण	उपन्यासिक	औपन्यासिक
साहित्कार	साहित्यकार	कोमलांगिनी	कोमलांगी	फिटकिरी	फिटकरी
कलुशित	कलुषित	तत्वान्वेशी	तत्वान्वेषी	प्रमाणित	प्रामाणित
जाजवल्यमान	जाज्वल्यमान	सर्व्तोमुखी	सर्वतोमुखी	तिलांजली	तिलांजलि
अस्थापना	अवस्थापना	छत्रछाया	छत्रच्छाया	बृजनाथ	ब्रजनाथ
सन्निवेष	सन्निवेश	मैथलीशरण	मैथिलीशरण	क्रतघ्न	कृतघ्न
साहित्यकता	साहित्यिकता	पुनर्स्थापना	पुनर्स्थापन	एतिहासिक	ऐतिहासिक
उज्जवल	उज्ज्वल	दिवारात्रि	दिवारात्र	भ्रात्रजन	भ्रातृजन
प्रज्वल	प्रज्वल	मुनिओ	मुनियों	अंग्रेजी	अंगरेजी
प्रज्वलित	प्रज्वलित	शमशान	श्मशान	सन्यासी	संन्यासी
अभ्युक्ति	अभियुक्ति	प्रत्योपकार	प्रत्युपकार	औतार	अवतार
अनुग्रहित	अनुगृहीत	अर्धांगिनी	अर्द्धांगिनी	बारात	बरात
बीबी	बीवी	शुशुम्ना	सुषुम्ना	जाग्रत	जागरित

यथेष्ठ	यथेष्ट	उदघाटन	उद्घाटन	बिसवा	बिस्वा
सर्जन	सृजन	उन्तीस	उनतीस	बीबी	बीवी
अंतर्ध्यान	अन्तर्धान	उहापोह	ऊहापोह	भागवत्प्रेम	भगवत्प्रेम
तत्मय	तन्मय	एकत्रित	एकत्र	भोंक	भौंक
मनोकामना	मनःकामना	ऐहतियात	एहतियात	भेंड़	भेड़
रीत्यानुसार	रीत्यनुसार	एच्छिक	ऐच्छिक	मालुम	मालूम
अधगति	अधोगति	कालीदास	कालिदास	शिशू	शिशु
दिगजाल	दिग्जाल	कूबत	क़ूवत	शंभू	शंभु
मनोकष्ट	मनःकष्ट	क्योकी	क्योंकि	सिविर	शिविर
निरोपम	निरुपम	कसोटी	कसौटी	शैया	शय्या
मतेक्य	मतैक्य	काराग्रह	कारागृह	षड़यंत्र	षड्यंत्र
स्वयम्वर	स्वयंवर	झोपड़ी	झोंपड़ी	स्थाई	स्थायी
मनज्ञ	मनोज्ञ	टिपण्णी	टिप्पणी	संवर्दन	संवर्धन/संवर्द्धन
मनहर	मनोहर	ताबुत	ताबूत	समान	सामान
दिवारात्रि	दिवरात्र	तत्व	तत्त्व	सप्ताहिक	साप्ताहिक
सानन्दित	सानन्द	त्रितीय	तृतीय	सिंहवाहनी	सिंहवाहिनी
भ्रातागण	भ्रातृगण	तत्वाधान	तत्त्वावधान	स्वास्थ	स्वास्थ्य
सतोगण	सत्वगण	तबियत	तबीयत	सौंदर्यता	सौंदर्य
मंत्रीवर	मंत्रिवर	त्योरी	त्यौरी	सामर्थ	सामर्थ्य
अहर्निश	अहिर्निश	तिलस्म	तिलिस्म	स्वप्नदृष्टा	स्वप्नद्रष्टा
आत्मापुरुष	आत्मपुरुष	थरमाकोल	थर्माकोल	साईबर	साइबर
अभल	अनभल	दरियायी	दरियाई	सुचारू	सुचारु
प्रफुल्लित	प्रफुल्ल	दंपत्ति	दंपति/दंपती	सूचिबद्ध	सूचीबद्ध
अग्नेय	आग्नेय	दयालू	दयालु	समाधी	समाधि
अनुषांगिक	आनुषंगिक	दुरावस्था	दुरवस्था	आहूती	आहुति
कृशांगिनी	कृशांगी	परिपेक्ष्य	परिप्रेक्ष्य	रामचरित मानस	रामचरितमानस
सुलोचनी	सुलोचना	पड़ौस	पड़ोस	बाल्मीकि	बाल्मीकी
चातकनी	चातकी	प्रदर्शिनी	प्रदर्शनी	ससुर	श्वसुर
राजन	राजन्	फिट	फुट	माखन	माक्षण
विद्वान	विद्वान्	बावत	बाबत	बांगमय	वाङ्मय
केंद्रिय	केंद्रीय	बर्दाश्त/बर्दास्त	बरदाश्त	गत्यावरोध	गत्यवरोध
ईच्छा	इच्छा	ब्रह्मण	ब्राह्मण	कड़ा	कठोर
इंजैक्शन	इंजेक्शन	बहु	बहू	कपूत	कुपुत्र
इसाई	ईसाई	बंगला	बांग्ला		

उत्तर (d)

52. निम्नलिखित वाक्यों में से एक शुद्ध वाक्य है-

(a) जो लोग बाहर जाना चाहते हैं, वह जा सकते हैं।

(b) कृपया एक गिलास पानी दीजिए।

(c) सरयू नदी का पाट बहुत लम्बा है।

(d) वह सातवें कक्षा में पढ़ता है।

उत्तर (b)

53. शब्द चयन की दृष्टि से इनमें एक शुद्ध वाक्य है-

(a) रवीन्द्रनाथ टैगोर की कुछ रचनाओं का नागरी भाषा में अनुवाद हुआ है।

(b) राजा हरिश्चन्द्र के सदृश्य कोई सत्यवादी नहीं हुआ।

(c) पद्य के चौथे भाग को चरण कहते हैं।

(d) रामचन्द्र शुक्ल ने अनेक ग्रन्थों की रचना की।

उत्तर (b)

54. निम्नलिखित वाक्यों में कौन-सा वाक्य विरामादि चिह्न की दृष्टि से शुद्ध है-

(a) क्रोध, चाहे जैसा भी हो। मनुष्य को दुर्बल बनाता है।

(b) क्रोध! चाहे जैसा भी हों। मनुष्य को दुर्बल बनाता है।

(c) क्रोध, चाहे जैसा भी हो, मनुष्य को दुर्बल बनाता है।

(d) क्रोध। चाहे जैसा भी हों। मनुष्य को दुर्बल बनाता है।

उत्तर (c)

55. निम्नलिखित वाक्यों से शुद्ध वाक्य चुनिए-

(a) चहारदिवारी के पार एक सुन्दर इमारत है।

(b) उपरोक्त वाक्य का संज्ञान लें।

(c) शिक्षणेत्तर कर्मचारी आज शाम को एकत्र होंगे।

(d) यह कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

उत्तर (d)

56. 'उसे मृत्यु-दंड की सजा मिली' प्रस्तुत वाक्य की अशुद्धि स्पष्ट करें।

(a) संस्कृत के शब्दों का प्रयोग हुआ है।

(b) विदेशी शब्द 'सजा' का प्रयोग हुआ है

(c) दण्ड और सजा समानार्थी शब्दों का प्रयोग हुआ है

(d) कोई अशुद्धि नहीं है।

उत्तर (c)

57. निम्नलिखित में से कौन सा वाक्य व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध है?

(a) वह दण्ड देने के योग्य है

(b) चार विद्यार्थी नकल करते हुए पकड़े गए।

(c) मैंने यह पुस्तक पढ़ी है।

(d) उन्होंने अभी-अभी खाना खाया

उत्तर (a)

58. निम्नलिखित में से कौन सा वाक्य शुद्ध वाक्य है?

(a) मैं सारी रात भर जागता रहा।

(b) मैं पूरी रात भर जागता रहा

(c) मैं सारी रात जागता रहा।

(d) मैं पूरी तरह में जागता रहा।

उत्तर (C)

59. निम्नलिखित में से कौन सा वाक्य शुद्ध

(a) यह व्यर्थ बात करने से कोई लाभ नहीं है।

(b) संपूर्ण देश भर में निराशा छा गई।

(c) भाई ने भाई के साथ सलाह की।

(d) कृपया पत्रोत्तर शीघ्र दें।

उत्तर (d)

60. "महान व्यक्तियों में भौतिक वस्तुओं के प्रति.....पाई जाती। वाक्य के रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए उपयुक्त शब्द छांटिए -

(a) निर्लिप्तता

(b) लिप्तता

(c) निष्कपटता

(d) निपटता

उत्तर (a)

.....समाप्त .....

www.lakshyaiaslko.com

LAKSHYA IAS

युवाओं का सही मार्गदर्शन एक मात्र लक्ष्य

हमारी अन्य शिक्षण सामग्री

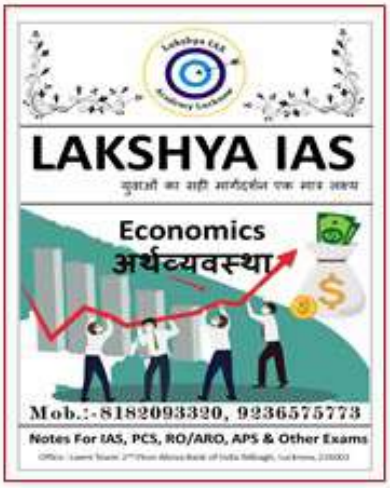

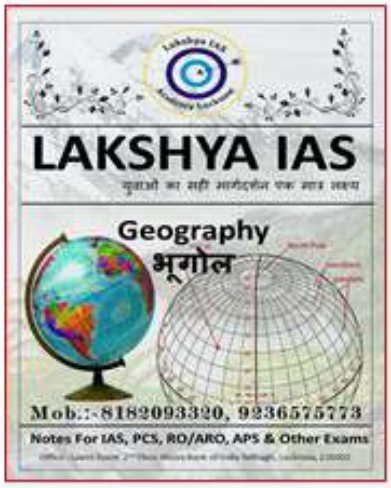

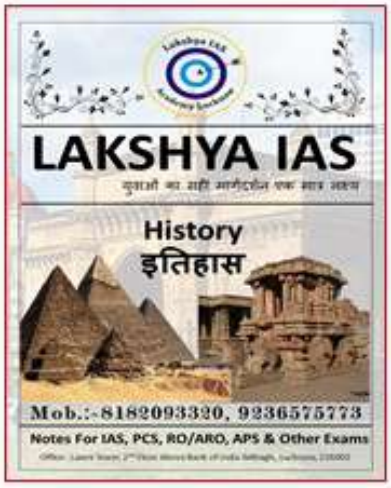

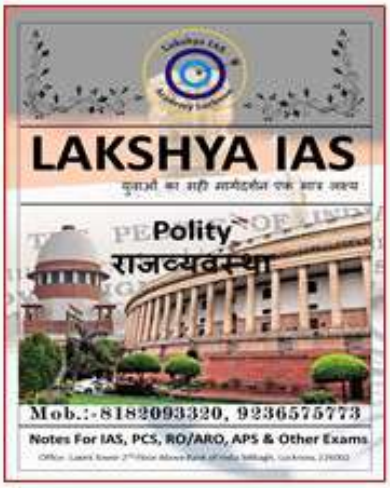

Download APP

Online / Offline
All Batch Start

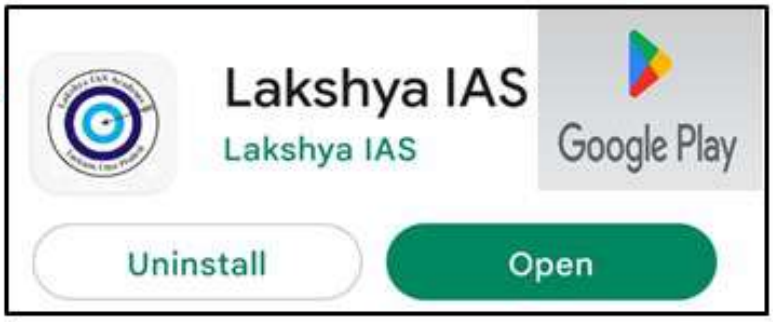

Mob.:-8182093320, 9236575773

Notes For IAS, PCS, RO/ARO, APS & Other Exams

Office : Laxmi Tower 2nd Floor Above Bank of India Telibagh, Lucknow, 226002